नील हरित शैवाल कल्चर एक परिचय और उनके बनाने की विधि

नीलहरित शैवाल कल्चर एक परिचय :–

जीवाणु खाद के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण खाद धान के खेतों में डालने हेतु प्रयोग की जाती है, जिसे शैवाल कल्चर या एली कल्चर कही जाती है। इस कल्चर का प्रयोग करने से 20–25 किलो प्रति हेक्टर दर से नेत्रजन खाद का खर्च बचा सकते हैं। धान की खड़ी फसल में नेत्रजन देने के लिए एलीकल्चर का उपयोग सबसे सस्ता एवं आसान है। इसे किसान भाई स्वंय तैयार कर सकते हैं।

धान की रोपनी के एक सप्ताह बाद नीलहरित शैवाल का सूखा कल्चर 10 किलो ग्राम प्रति हेक्टर की दर से स्थिर पानी पर छीरक दें। इसे वर्षा होते रहने पर नहीं डालें। धान की फसल में 3–4 वर्षो तक लगातार शैवाल का प्रयोग करने पर इनकी संख्या काफी मात्रा में बढ़कर मिट्टी में स्थापित हो जाती है और मिट्टी की उर्वराशक्ति कायम रहती है।

नील हरित शैवाल कल्चर बनाने की विधि –

आवश्यक सामान :

6'x3' x 9' माप का लोहे का ट्रे सिमेंटेड टैंक या पालीथीन बिछा हुआ गड्ढ़ा।

20 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 25 ग्राम फ्यूराडॉन, 2 ग्राम सोडियम मोलिबडेट तथा स्टार्टर कल्चर एक पैकेट।

समय :

मार्च से जून माह का मौसम शैवाल कल्चर बनाने के लिए उपयुक्त है।

स्टार्टर कल्चर :

- ❖ कल्चर बनाने के लिये मिट्टी जीवाणु शाखा बिहार कृषि महाविद्यालय, भागलपुर, कृषि विज्ञान केन्द्र, मधेपुरा से प्राप्त की जा सकती है।

विधि :

- ❖ 6'x3' x 9' माप का लोहे का ट्रे/ सिमेंटेड या इस माप के गड्ढा में पालीथीन बिछाकर 10 किलो खेत की मिट्टी लें।
- ❖ मिट्टी में 200 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 25 ग्राम फ्यूराडॉन तथा सोडियम मालिबडेट को अच्छी तरह मिलावें।
- ❖ ट्रे में लगभग आधा भाग तक पानी डालें। मिट्टी और पानी का मिश्रण बनाकर थिराने के लिए छोड दें।
- ❖ ट्रे में जब मिट्टी बैठ जाय तब स्टाटर कल्चर 150–200 ग्राम महीन चूर्ण पानी के सतह पर समान रूप से छिड़क दें।
- ❖ 10–15 दिनों में शैवाल की एक मोटी परत पानी के ऊपर तथा मिट्टी की सतह पर जम जायेगी। इस अवधि के बाद शैवाल की बढ़ोतरी स्थिर हो जायेगी।
- ❖ शैवाल की वृद्धि स्थिर होने पर ट्रे का पानी निकाल कर सूखने दें।
  ट्रे में शैवाल सहित मिट्टी की पपड़ी को खुरच कर जूट के बोरे में जमा कर रखें।
- ❖ दुबारा ट्रे में बचे हुए मिट्टी में सिर्फ पानी डालकर मिट्टी और पानी का मिश्रण बनावें। पानी साफ होने के बाद स्टार्टर कल्चर का चूर्ण पहले की तरह छिड़क दें। कल्चर तैयार होने की अवधि तक इंतजार करें। इस प्रकार 3–4 बार कल्चर तैयार करने के बाद ट्रे की मिट्टी खत्म हो जाती है। पुनः 10 किलो ग्राम मिट्टी लेकर पहले की भाँति अपनी जरूरत के मुताबिक कल्चर तैयार करें।

रख रखाव :

- ❖ तैयार कल्चर को जूट के बोरे या प्लास्टिक की थैली में जमाकर सूखे स्थान पर रखें।
- ❖ एकत्र किये गये कल्चर को रसायनिक खाद के सम्पर्क में नहीं रखें।
- ❖ स्टार्टर कल्चर तथा शैवाल कल्चर बनाने की विधि के संबंध में जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, मधेपुरा से सम्पर्क करें।

आलेख
डॉ0 वि0 के0 जयसवाल
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, मधेपुरा

मुद्रण एवं प्रकाशन
श्री आभाशु सी0 जैन
उप कृषि निदेशक (सूचना)
मीठापुर फार्म, बिहार, पटना